Bihar Board Class 7 Hindi Notes Chapter 9 वर्षा बहार

वर्षा बहार Summary in Hindi

वर्षा बहार सबके, मन को लुभा रही है।
नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है।

भावार्थ – वर्षा ऋतु का आनन्द सबके मन को आकर्षित कर रहा है। आकाश में घनघोर बादल अनोखी शोभा बिखेर रहा है।

बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं।
पानी बरस रहा है, झरने भी बह रहे हैं।

भावार्थ – आकाश में बिजली चमकती है, बादल गरजते हैं, पानी बरसता है और झरने बहने लगते हैं।

चलती हवा है ठण्डी, हिलती है डालियाँ सब।
बागों में गीत सुन्दर, गाती है मालिने अब ।।

भावार्थ – ठण्डी-ठण्डी हवाएँ चल रही हैं। सभी पेड़-पौधे की डालियाँ हिल रही हैं। बगीचे में मालियों की बेटी (मालिन) सुन्दर गीत गा रही है।

तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते।
फिरते लखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते ॥

भावार्थ – तालाब में जलीय जीव अति प्रसन्न दिखते हैं। वर्षा ऋतु में पपीहे उड़ते हुए दिखाई पड़ते हैं।

वर्षा होने से ग्रीष्म ऋतु अपना ताप छोड़ने लगा है।
करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे।
मेढ़क लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे ॥

भावार्थ – वर्षा ऋतु में वन में मोर नाचने लगते हैं । मेढ़क अपना प्रिय सुगीत सुनाकर लोगों को लुभा रहा है।

'खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है,
बागों में खूब सुख से, आमोद छा रहा है।

भावार्थ – वर्षा ऋतु में गुलाब खिलकर अपना सुगन्ध उड़ा रहा है। .बंगीचे में सब ओर आसानी से आनन्द छा रहा है।

चलते कतार याँधे, देखो ये हंस सुन्दर,
गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर ॥

भावार्थ – वर्षा ऋतु में सुन्दर हंस कतार बाँधे चलते हैं, सुन्दर गीत गाकर किसानों के मन हर रहे हैं।

https://www.evidyarthi.in/

इस भाँति है अनोखी, वर्षा बहार भू पर,
सारे जगत की शोभा निर्भर है इसके ऊपर ।।

भावार्थ – इस प्रकार पृथ्वी पर वर्षा ऋतु अनोखी आनन्द ला दिया है। सम्पूर्ण जगत की शोभा वर्षा ऋतु पर निर्भर है।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/